प्रथमः पाठः

वन्दना

(नमः तथा नमामि के प्रयोग)

प्रस्तुत पाठ में संसार के सृष्टिकर्ता परमात्मा की वन्दना विभिन्न पौराणिक श्लोकों में की गयी है। ज्ञान का आरंभ रम प्रभु की स्तुति से ही हो यह इस पाठ का लक्ष्य है। परमात्मा जगत् के सभी कार्यों के संचालक तथा बिना माँगे ब-कुछ देने वाले हैं। इसलिए सबका कर्तव्य है कि उनकी वन्दना गान सहित करें।

नमस्ते विश्वरूपाय प्राणिनां पालकाय ते।
जन्म-स्थिति-विनाशाय विश्ववन्द्याय बन्धवे ॥1॥

प्रसादे यस्य सम्पत्तिः विपत्तिः कोपने तथा।
नमस्तस्मै विशालाय शिवाय परमात्मने ॥2॥

ज्ञानं धनं सुखं सत्यं तपो दानमयाचितम्।
प्रसादे यस्य लभते मानवस्तं नमाम्यहम् ॥3॥

नमामि देवं जगदीशरूपं स्मरामि रम्यं च जगत्स्वरूपम्।
वदामि तद्-वाचक-शब्दवृन्दं महेश्वरं देवगणैरगम्यम् ॥4॥

शब्दार्थः

नमस्ते (नमः + ते)	-	नमस्कार
विश्वरूपाय	=	विश्वरूप (समस्त संसार ही जिसका रूप है वैसा)के लिए
प्राणिनाम्	=	प्राणियों के / की
पालकाय	=	पालन करने वाले के लिए
ते (तुभ्यम्)	=	आपके लिए
जन्म-स्थिति-विनाशाय	=	रचना, विद्यमानता तथा नाश के लिए
विश्ववन्द्याय	=	संसार के द्वारा वन्दनीय के लिए
बन्धवे	=	मित्र / संबंधी के लिए
प्रसादे	=	कृपा होने पर
यस्य	=	जिसका
सम्पत्तिः	=	धन
विपत्तिः	=	संकट
कोपने	=	क्रोध करने पर / में
तथा	=	और, उस प्रकार से
नमस्तस्मै (नमः+तस्मै)	=	उसको / उनको नमस्कार है
विशालाय	=	बड़े / विशाल को / के लिए
शिवाय	=	शिव के लिए/ मङ्गल के लिए
परमात्मने	=	परमात्मा के लिए

ानम्	=	ज्ञान, जानकारी
त्यम्	=	सत्य, सच
पः	=	तपस्या
ानम्	=	दान
याचितम्	=	न माँगा गया, बिना माँगे
भते	=	प्राप्त करता है
ानवस्तम् (मानवः+तम्)	=	मानव / मनुष्य, (तम्=) उसको
मान्यहम् (नमामि+अहम्)	=	नमस्कार करता हूँ, (अहम्=) मैं
मामि	=	नमस्कार करता हूँ
वम्	=	देवता को
गदीशरूपम् (जगत्+ईशरूपम्)	=	संसार के स्वामी रूप वाले (को)
मरामि	=	याद / स्मरण करता हूँ
म्यम् सुन्दर जगत्स्वरूपम्	=	जगत् (की रचना) के रूप वाले
दामि	=	कहता / बोलता हूँ
द् वाचक-शब्दवृन्दम्	=	उस (देव) के बोधक शब्दसमूह को
हेश्वरम्	=	महान् ईश्वर को
वगणैरगम्यम् (देवगणैः+अगम्यम्)	=	देवसमूहों के द्वारा न प्राप्त करने योग्य

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

मस्ते	=	नमः + ते (विसर्गसन्धिः)
मस्तस्मै	=	नमः + तस्मै (विसर्गसन्धिः)

मानवस्तम् - मानवः + तम् (विसर्गसन्धिः)

नमाम्यहम् = नमामि + अहम् (यण्सन्धिः)

जगदीशः - जगत् + ईशः (व्यञ्जनसन्धिः)

देवगणैरगम्यम् - देवगणैः + अगम्यम् (विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

लभते - √लभ् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

नमामि = √नम् , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

स्मरामि = √स्मृ , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

वदामि = √वद् , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

अगम्यम् = नञ् + √गम् + यत्, नपुं, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. उच्चैः वदत -

(क)	नमामि	नमावः	नमामः
	वदामि	वदावः	वदामः
	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः
(ख)	पालकाय	पालकाभ्याम्	पालकेभ्यः
	विनाशाय	विनाशाभ्याम्	विनाशेभ्यः
	विशालाय	विशालाभ्याम्	विशालेभ्यः

2. श्लोकान् सस्वरं गायत ।

लिखित:

1. श्लोकांशान् लिखत -

(क) प्रसादे यस्य ..... विपत्तिः ..... तथा ।

..... विशालाय ..... परमात्मने ॥

(ख) नमामि देवं .....

.....तत्कार्यजगत्स्वरूपम् ।

..... तद् वाचक-शब्दवृन्दम्

महेश्वरं ..... ॥

2. उत्तराणि लिखत -

(क) शिवस्य प्रसादात् किम् मिलति ?

(ख) कस्य कोपने विपत्तिः लभ्यते ?

(ग) जगत् कीदृश्यम् अस्ति ?

(घ) संसारस्य विनाशं कः करोति ?

(ङ) प्राणिनां पालनं कः करोति ?

3. सुमेलितं कुरुत -

(क)	(ख)
सुखम्	सम्पत्तिः
सत्यम्	ग्रहणम्
विपत्तिः	कोपनम्
जन्म	दुःखम्
प्रसादः	मिथ्या
दानम्	विनाशः

6. रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) शिवाय ..... । नमः / नमामि

(ख) ..... नमः । गणेशं / गणेशाय

(ग) ..... नमः । सरस्वतीं / सरस्वत्यै

(घ) जगदीशं ..... । नमामि / नमः

(ङ) मातरं ..... । नमः / नमामि

(च) ..... स्मरामि । कृष्णं / कृष्णाय

(छ) ..... नमः । तस्मात् / तस्मै

7. सन्धिविच्छेदं कुरुत -

यथा - यद्यपि = यदि + अपि

नमस्तस्यै = ... + ...

धर्मात्मा = ... + ...

गच्छाम्यहम् = ... + ...

जगदीश्वरः = ... + ...

नमस्कारः = ... + ...

गणेशः = ... + ...

सदैव = ... + ...

8. वाक्यानि रचयत -

गच्छामि - .....

यूयम् - .....

विद्यालयात् - .....

देवम् - .....

वृक्षेषु - .....

9. पाठभिन्नं श्लोकमेकं स्वस्मरणेन लिखत ।

10. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

(क) वह पिता को प्रणाम करता है ।

(ख) वे दोनों धन प्राप्त करते हैं ।

(ग) वे सब सत्य बोलते हैं ।

(घ) तुम वेद पढ़ते हो ।

(ङ) देवता को (देवाय) नमस्कार है ।

(च) तुम दोनों विद्यालय जाते हो ।

(छ) तुमलोग कार्य करते हो ।

योग्यता-विस्तारः

किसी कार्य का आरम्भ स्तुति, प्रार्थना या वन्दना से किया जाता है । इसमें यह भावना होती है कि हमारा कार्य अच्छी तरह चलेगा और बिना विघ्न-बाधा के पूरा हो जायेगा । इसीलिए पाठशालाओं में भी शिक्षणकार्य का आरम्भ प्रार्थना से होता है । प्रार्थना आस्तिकता का संकेत देती है कि हम किसी दिव्य-शक्ति में विश्वास करते हैं । संस्कृत के सभी ग्रन्थ मंगलाचरण के रूप में प्रार्थना से ही आरम्भ होते हैं ।

प्रार्थना अपने आराध्यदेव या सबके आराध्य परम प्रभु की की जाती है । सर्वधर्मसमभाव की दृष्टि से परमेश्वर या परम प्रभु की वन्दना सर्वत्र वाञ्छनीय है क्योंकि उनमें किसी प्रकार का पक्षपात या वैषम्य नहीं है । वे ही जगत् के सृष्टिकर्ता, पालक तथा संहारक भी हैं । जगत् की सारी व्यवस्था का संचालन उन्हीं से होता है । उनकी प्रसन्नता में समस्त प्राणियों का कल्याण

निहित है और उनका कोप संकट लाता है । कोई अपने कर्तव्य से च्युत होता है तो वह परमात्म का कोपभाजन बनता है । ईश्वर की वन्दना उनके प्रति कृतज्ञता का निवेदन है । भारतवर्ष में वेद उपनिषद्, पुराण तथा अन्य सभी ग्रन्थ ईश-वन्दना से भरे हैं । पुराणों में विविध देवों के रूप में भी परमेश्वर की स्तुति है । ऋग्वेद में कहा गया है - **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** । अर्थात् एक ही तत्त्व की स्तुति अनेक रूपों में होती है । हम जिस रूप में भी वन्दना कर रहे हों वह परमात्मा की ही वन्दना है -

सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ।

*****